खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1 अनुवाद : हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। संस्कृत में वाक्यों के संगठन के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। जैसे – 'रामः गृहं गच्छति' वाक्य ठीक है तथा गृहं गच्छति रामः भी सही है, किन्तु सरलता के लिए क्रमशः कर्त्ता, कर्म और तब अन्त में क्रिया रखी जाती है। इसलिए किसी भी वाक्य का अनुवाद करते समय उसके कर्त्ता, कर्म और क्रिया तथा अन्य कारकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति चिह्नरहित नहीं प्रयुक्त होता है तथा इसकी क्रियाओं में लिंग-भेद नहीं होता, तीनों लिंगों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के नियम

(1) हिन्दी में एकवचन और बहुवचन ये दो ही वचन होते हैं, किन्तु संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन– ये तीन वचन होते हैं।

(2) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता और क्रिया प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के होते हैं।

(3) संस्कृत में तीन वचनों के कारण तीनों पुरुषों में प्रत्येक क्रिया के प्रत्येक काल में $3 \times 3 = 9$ रूप होते हैं। जैसे लिख्, (लिखना), वर्तमान काल (लट् लकार) में लिखति, लिखतः, लिखन्ति, लिखसि, लिखथः, लिखथ, लिखामि, लिखावः, लिखामः, ये नौ रूप हैं।

(4) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता, कर्म, करण आदि सात कारक होते हैं, किन्तु उन्हें प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि कहा जाता है। संस्कृत में कारकों को विभक्ति कहते हैं। नीचे की तालिका में उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है–

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा (सहायता)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, ओ, अरे, ए आदि।

(5) संस्कृत में तीनों पुरुषों में कर्त्ता के ये नौ रूप होते हैं–

पुरुष	**एक वचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब, लोग)

मध्यम पुरुष	त्वम् (तू, तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब लोग)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब, लोग)

ये नौ कर्त्ता के रूप में आते हैं। इन्हीं के आधार पर प्रत्येक काल की क्रिया के नौ रूपों का प्रयोग किया जाता है।

(6) कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है अर्थात् कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन में होगी। क्रिया जिस काल की हो, उसी काल का रूप लिखा जाता है। जैसे-वह जाता है–यहाँ कर्त्ता 'वह' (सः) प्रथम पुरुष एकवचन का है, अतः उसके अनुसार क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की होगी। 'जाता है' क्रिया वर्तमान काल (लट् लकार) की है। अतः 'गम्' धातु के 'लट्' लकार (वर्तमान काल) का रूप प्रयुक्त होगा, 'गम्' धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होता है–गच्छति। इसलिए अनुवाद होगा 'सः गच्छति' (वह जाता है)। इसी तरह अन्य वाक्यों को समझना चाहिए।

(7) संस्कृत में क्रिया के काल को व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित लकारों का प्रयोग होता है–

1. वर्तमान काल-लट् लकार। 2. भूतकाल-लङ् लकार।
3. भविष्यत् काल-लृट् लकार। 4. आज्ञासूचक-लोट् लकार।
5. विधिसूचक-विधिलिङ् लकार।

वर्तमान, भूत, भविष्य आदि कालों को सूचित करने के लिए, प्रयुक्त लकारों का रूप इस प्रकार होता है– जैसे-पठ् (पढ़ना) लट्लकार (वर्तमानकाल)।

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

इसी प्रकार वद् (बोलना), रक्ष् (रक्षा करना), हस् (हंसना), खाद् (भोजन करना), नम् (प्रणाम करना), गम् (जाना), पच् (पकाना), आदि धातुओं के रूप होते हैं।

ऊपर बताये गये 9 कर्त्ता और प्रत्येक काल की क्रिया के 9 रूपों का प्रयोग इस प्रकार देखा जा सकता है–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
	(वह पढ़ता है)	(वे दोनों पढ़ते हैं)	(वे लोग पढ़ते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वं पठसि	युवां पठथः	यूयं पठथ
	(तुम पढ़ते हो)	(तुम दोनों पढ़ते हो)	(तुम सब लोग पढ़ते हो)
उत्तम पुरुष	अहं पठामि	आवां पठावः	वयं पठामः
	(मैं पढ़ता हूँ)	(हम दोनों पढ़ते हैं)	(हम सब लोग पढ़ते हैं)

(8) ऊपर कहे गये मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के 6 कर्त्ताओं को छोड़कर शेष जितने कर्त्ता होते हैं उनके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे छात्रः पठसि (छात्र पढ़ता है) कृष्णः पठति (कृष्ण पढ़ता है), बालकः पठन्ति (लड़के पढ़ते हैं), भवान् पठसि (आप पढ़ते हैं), कः पठति (कौन पढ़ता है), गजः गच्छति (हाथी जाता है) आदि।

इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया को जोड़ा जाता है। इनके अतिरिक्त वाक्य में जितने शब्द आते हैं उनका प्रयोग उनके कारकों के अनुसार होता है।

(9) अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य का कर्त्ता खोजना चाहिए। कर्तृवाच्य में क्रिया के पहले कौन लगाने से उत्तर में आनेवाली वस्तु 'कर्त्ता' होती है। फिर कर्त्ता यदि एकवचन हो तो प्रथमा विभक्ति के एकवचन का रूप, द्विवचन हो तो 'प्रथमा' के द्विवचन का रूप और बहुवचन हो तो प्रथमा के बहुवचन का रूप निश्चित करना चाहिए। इसके बाद कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए। कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने पर क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए। इसके बाद क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए। इसके बाद वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों

के अनुसार रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।

(10) क्रिया का सामान्य रूप 'धातु' कहलाता है, यथा–गच्छति, पठसि, अपठत्, पठेत् आदि क्रियाओं में गच्छ, (गम्), पठ्, धातु हैं। ये सब धातु तीन प्रकार की होती हैं—परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद। परस्मैपद धातुओं में तिप्, तस्, झि। सिप्, थस्, थ। मिप्, वस्, मस् प्रत्ययों का तथा आत्मनेपद धातुओं में त, आताम्, झ। थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, वहिङ्, महिङ्, प्रत्ययों का प्रयोग होता है। विशेष नियमानुसार इन प्रत्ययों के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन होता है। भिन्न-भिन्न प्रत्ययों के जोड़ने से धातु के विविध रूप बनते हैं।

लकारों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

नियम 1. वर्तमान काल में कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और उसी के अनुसार क्रिया प्रयुक्त होती है। यथा–

(1) श्याम पुस्तक पढ़ता है। श्यामः पुस्तकं पठति।

(2) सभी छात्र विद्यालय जाते हैं। सर्वे छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।

(3) तुम नगर कब जाते हो? त्वं नगरम् कदा गच्छसि?

(4) हम दोनों गर्म जल पीते हैं। आवाम् उष्णं जलं पिबावः।

(5) मैं विद्यालय क्यों जाता हूँ? अहं विद्यालयं किं गच्छामि?

नियम 2. जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की होती है। यथा–

(1) राम और श्याम बाजार जाते हैं। रामः श्यामश्च आपणं गच्छतः।

(2) सीता और गीता खाना खाती हैं। सीता गीता च भोजनं खादतः।

नियम 3. जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की होती है। यथा–

राम अथवा मोहन बाजार जाता है। रामः मोहनः वा आपणं गच्छति।

नियम 4. यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है। यथा–

(1) तुम और श्याम जाते हो। त्वं श्यामः च गच्छथः।

(2) दिनेश और तुम दोनों जाते हो। दिनेशः युवां च गच्छथ।

इसी प्रकार यदि उत्तम पुरुष के कर्त्ता के साथ प्रथम पुरुष एवं मध्यम पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष की वचनानुसार होगी। यथा–

(1) मैं और राम जाते हैं। अहं रामश्च गच्छावः।

(2) सुरेश, तुम और मैं जाते हैं। सुरेशः त्वं अहं च गच्छामः।

(3) मैं, तुम और वे सब पढ़ते हैं। अहं त्वं ते च पठामः।

नियम 5. यदि कई कर्त्ता 'वा' अथवा 'या' से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है— यथा–

(1) सोहन अथवा तुम जाते हो। सोहनः त्वं वा गच्छसि।

(2) तुम अथवा मोहन जाते हो। त्वं मोहनः वा गच्छति।

(3) मैं अथवा तुम जाते हो। अहं त्वं वा गच्छसि।

नियम 6. संस्कृत में आप प्रथम पुरुष का कर्त्ता है। भवान् (आप) भवन्तौ (आप दोनों) भवन्तः (आप सब) प्रथम पुरुष पुँल्लिंग के कर्त्ता हैं, जबकि भवति (आप) भवत्यौ (आप दोनों) भवत्यः (आप सब) प्रथम पुरुष स्त्रीलिंग के कर्त्ता हैं। जैसे– आप सब जाते हैं = भवन्तः गच्छन्ति। आप सब जाती हैं = भवत्यः गच्छन्ति।

नियम 7. अव्यय या विकाररहित शब्दों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे – कृष्णः इति प्रसिद्धः। यहाँ पर इति अव्यय के कारण कृष्णः में प्रथमा विभक्ति है।

➨ आदर्श वाक्य

1. त्वं पठसि।	–	तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
2. युवां पठथः।	–	तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।
3. यूयं पठथ।	–	तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
4. त्वं रामश्च गच्छथः।	–	तुम और राम जाते हो।
5. युवां रामः हरिश्च गच्छथ।	–	तुम, राम और हरि जाते हो।
6. यूयं महेशः सुरेशश्च गच्छथ।	–	तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
7. रामः कृष्णश्च पठतः।	–	राम और कृष्ण पढ़ते हैं।

2. लङ् लकार (भूतकाल)

नियम 1. जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है।

नियम 2. कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्रायः 'था' के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे – पठसि स्म = पढ़ रहा था। हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

1. छात्रः अगच्छत्।	- छात्र चला गया।	(पुंल्लिङ्ग)।
2. छात्रा अगच्छत्।	- छात्रा चली गयी।	(स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलम् अपतत्।	- फल गिरा।	(नपुंसकलिङ्ग)।
4. सः अपश्यत्।	- उसने देखा।	(पुंल्लिङ्ग)।
5. यूयम् अपतत्।	- तुम लोग गिर गये।	

3. लृट्लकार (भविष्यत्काल)

नियम 1. जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में लृट्लकार का प्रयोग होता है? इसके रूप लट्लकार के समान होते हैं केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति-पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

1. सः पठिष्यति।	- वह पढ़ेगा।	(पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठिष्यति।	- वह पढ़ेगी।	(स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलं पतिष्यति।	- फल गिरेगा।	(नपुंसकलिङ्ग)।
4. रामः श्यामश्च गमिष्यतः।	- राम और श्याम जायेंगे।	
5. श्यामः हरिः, वा भक्षयिष्यति।	- श्याम या हरि खायेगा।	

4. लोट्लकार (आज्ञार्थक)

नियम 1. लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम 2. प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्रायः इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम 3. मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम 4. उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. सः लिखतु।	–	वह लिखे।	(पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठतु।	–	वह पढ़े।	(स्त्रीलिङ्ग)।
3. भवान् आगच्छत्।	–	आप आयें।	(प्रार्थना)।
4. त्वं पठ।	–	तुम पढ़ो।	(आज्ञा)।
5. चिरंजीवी भव।	–	दीर्घायु हो।	(आशीर्वाद)।

5. विधिलिङ् (चाहिए के अर्थ में)

नियम 1. विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष – इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट्लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है उसे कर्म का चिह्न न समझना चाहिए।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठेत्।	– लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े।	(पुंल्लिङ्ग)
2. बालिका पठेत्।	– लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े।	(स्त्रीलिङ्ग)
3. बालकाः पठेयुः।	– लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़ें।	(पुंल्लिङ्ग)
4. छात्रः तत्र पठेत्।	– छात्र वहाँ पढ़ें।	(विधि)
5. बालकः किं कुर्यात्।	– लड़का क्या करे?	(प्रश्न)

कारकों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम 1. क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। जैसे– राम लिखता है – रामः लिखति (कर्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और रामः प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम 2. संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं। अतः अर्थ बनाने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे रामः-राम। गजः-हाथी, शुकः-तोता आदि।

नियम 3. पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे–तटः (पुंल्लिङ्ग) तटी (स्त्रीलिङ्ग) तटम् (नपुंसकलिङ्ग)- किनारा आदि।

नियम 4. अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे गांधी 'बापू' इति प्रसिद्धः अस्ति-गांधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं। नेहरू नाम एक एव महापुरुषः असीत् – नेहरू नाम के एक ही महापुरुष थे।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः बालिका च पठतः। – लड़का और लड़की पढ़ रही है।
2. भानुः शशिः वा गच्छति। – भानु या शशि जाता है।
3. शुकः एकः पक्षी अस्ति। – तोता एक चिड़िया है।
4. इदम् एकं नगरम् अस्ति। – यह एक नगर है।
5. इयम् एका नगरी अस्ति। – यह एक नगरी है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. अशोक प्रियदर्शी इस नाम से प्रसिद्ध था। 2. राम और लक्ष्मण भाई थे। 3. गीता और रेखा चली गयीं। 4. सीता या रीता नहीं आयेंगी। 5. यह एक सुन्दर उपवन है। 6. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। 7. सीता सती नारी थी। 8. वे लोग वहाँ जायें। 9. तुम्हें सदा हँसना चाहिए। 10. यह विशाल भवन है।

सहायक शब्द – इस नाम से-इति। भाई-भ्रातरौ।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम – किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–बालकः वानरं ताडयति-लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष – क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है वह कर्म होता है। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता है। जैसे- रामः पुस्तकं पठति – राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या' पढ़ता है उत्तर में 'पुस्तक' आती है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। जैसे– 1. अहं गणेशं नमामि- मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। 2. बालकः फलानि खादन्ति- लड़के फल खाते हैं आदि।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकाः नाटकम् अपश्यन्। –लड़कों ने नाटक देखा।
2. बालिकाः गीतं गायन्ति। –लड़कियाँ गीत गाती हैं।
3. अहं सूर्यं पश्यामि। –मैं सूर्य को देखता हूँ।
4. शिक्षकः छात्रान् ताडयति। –अध्यापक छात्रों को पीटता है।
5. त्वं बालकौ कुत्र अपश्यः? –तुमने दो लड़कों को कहाँ देखा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. राम ने रावण को मारा था। 2. छात्र एक निबन्ध लिख रहे हैं। 3. हमने एक गीत गाया। 4. वे शिक्षक को प्रणाम करते हैं। 5. मैं एक कहानी कहूँगा। 6. वे लोग फल खायेंगे। 7. रमेश पुस्तकें लाता है। 8. वे चित्र देखेंगे। 9. हम दोनों ने एक पत्र लिखा। 10. मैंने दो गायों को देखा।

सहायक शब्द – मारा था = अहन्। लाता है = आनयति। गाया = अगायम्।

3. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति उपपद के रूप में)

जब सामान्य नियम के स्थान पर किसी विशेष नियम के अनुसार कोई विभक्ति हो जाती है, तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं।

नियम 1. याच् (माँगना), पच् (पकाना), प्रच्छ् (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना), आदि और इनके अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–

गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति– गुरु जी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

नियम 2. गमनार्थक धातु के योग में (जहाँ जाया जाता है उसमें) द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-बालकः गृहं गच्छति-लड़का घर में जाता है।

नियम 3. शी (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। जैसे- रामाः शिलाम् अधिशेते-राम शिला पर सोता है।

नियम 4. अभितः (सब तरफ) परितः-चारों तरफ। सर्वतः (सब तरफ) उभयतः (दोनों ओर), हा, धिक्, प्रति, बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे मम ग्रामं परितः अभितः सर्वतः वा वृक्षाः सन्ति – मेरे गाँव के चारों ओर या सब तरफ पेड़ हैं।

➡ आदर्श वाक्य

1. कपिः वृक्षम् आरोहति। – बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
2. सिंहः वनम् अटति। – सिंह वन में घूमता है।
3. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति। – राजा सिंहासन पर स्थित है।
4. विद्यालयम् उभयतः एका नदी वहति। – विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
5. व्याधः मृगं प्रति अपश्यत्। – बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। 2. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। 3. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। 4. लंका के चारों ओर समुद्र है। 5. अर्जुन रथ पर चढ़ते हैं। 6. लड़कियाँ कक्षा में प्रवेश करती हैं। 7. छात्र आसन पर बैठते हैं। 8. किसान गाँव में रहते हैं। 9. तुम्हें कक्षा में जाना चाहिए। 10. मेरे घर के चारों ओर पानी था।

सहायक शब्द – सड़क = राजमार्गम्, चढ़ता है = आरोहति, रहते हैं –अधिवसन्ति।

4. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम 1. जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान से या द्वारा है। जैसे – छात्रः मुखेन खादति– छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अतः वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति मुखेन हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अतः जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते है। जैसे– **अहं नेत्राभ्यां पश्यामि –** मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इनमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे – **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा कर्णैः (बहुवचन) शृणुमः – हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. रामः बाणेन बालिम् अहन्। – राम ने बाण से बालि को मारा।
2. यूयं स्व हस्ताभ्याम् (हस्तैः) कार्यं कुरुत। – तुम लोग अपने हाथ से काम करो।
3. बालकः हस्ताभ्याम् लिखति। – लड़का हाथ से लिखता है।
4. परिश्रमेण कार्यं सिद्धयति। – मेहनत से काम सिद्ध होता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. तुम लोग परिश्रम से पढ़ो। 2. किसान हल से खेत जोतते हैं। 3. हम लोग रोज गेंद से खेलते हैं। 4. वे पानी से पेड़ों को सींच रहे हैं। 5. लड़कियाँ स्वर से गाती हैं। 6. वे कान से कथा सुनते हैं। 7. लड़के पैरों से गेंद को मार रहे हैं। 8. परिश्रम से धन और धन से सुख होता है। 9. भीम ने गदा से दुर्योधन को मारा। 10. वह ध्यान से अपना पाठ याद करेगा।

सहायक शब्द – रोज-नित्यम्। गेंद से = कन्दुकेन। खेत = क्षेत्रम्। जोतते हैं = कर्षन्ति। सींचते हैं = सिञ्चन्ति। मार रहे हैं = ताडयन्ति। याद करेगा = स्मरिष्यति।

5. करण कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. साथ अर्थवाले 'सह, समम्, साकम्' के योग में, (जिसके साथ काम किया जाता है उसमें), तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **पिता पुत्रेण सह गच्छति**-पिता पुत्र के साथ जाता है।

नियम 2. जिस अंग के द्वारा शरीर में कोई विकार प्रतीत हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **सः कर्णेन बधिरः अस्ति**– वह कान का बहरा है।

नियम 3. पृथक्, बिना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **कलमेन बिना कथं लिखिष्यामि**– कलम के बिना मैं कैसे लिखूँगा।

➡ आदर्श वाक्य

1. सः अध्यापकेन सह गृहं गमिष्यति। – वह अध्यापक के साथ घर जायेगा।
2. अयं बालकःपादेन खञ्जः अस्ति। – यह लड़का पैर का लँगड़ा है।
3. पुस्तकेन बिना अहं किं पठामि। – पुस्तक के बिना मैं क्या पढ़ूँ?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. मैं मोहन के साथ घर जाऊँगा। 2. दुष्टों के साथ विवाद मत करो। 3. राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये। 4. सत्य बोलने से सम्मान होता है। 5. यह भिखारी आँख का अन्धा है। 6. हम लोग नाव से विहार करेंगे। 7. पत्नी के बिना घर सूना होता है। 8. विद्या के बिना बुद्धि नहीं होती है। 9. तुम लोगों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए। 10. वह स्वभाव से दुष्ट है।

सहायक शब्दः – बोलने से = भाषणेन। भिखारी = भिक्षुकः। नाव से = नौकया। सूना = शून्यम्। पढ़ना चाहिए = पठत।

6. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम 1. जिसे कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) के लिए अथवा 'को' है। जैसे–**राजा ब्राह्मणाय गां ददाति** राजा ब्राह्मण को गाय देता है। इस वाक्य में 'ब्राह्मण' को गाय देने का वर्णन है, अतः उसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

विशेषः– 'को' कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) का चिह्न है किन्तु सम्प्रदान कारक में भी 'को' का प्रयोग केवल देने के अर्थ में होता है। जैसे– **शिक्षकः छात्राय पुरस्कारं ददाति –** शिक्षक छात्र को इनाम देता है।

2. जब कोई वस्तु सदा के लिए दे दी जाती है तब वहाँ चतुर्थी विभक्ति होती है।

3. जहाँ कोई वस्तु थोड़े समय के लिए दी जाती है और देनेवाले का उस पर से अधिकार समाप्त नहीं होता, वहाँ चतुर्थी विभक्ति नहीं होती, बल्कि षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे – **सः रजकस्य वस्त्राणि ददाति–** वह धोबी को कपड़े देता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. राजा निर्धनाय वस्त्रं ददाति। – राजा गरीब को कपड़ा देता है।
2. त्वं बालकाय फलम् आनय। – तुम लड़के के लिए फल लाओ।
3. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। – पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।
4. सः कस्मै भोजनं दास्यति। – वह किसे भोजन देगा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. तुम मोहन को पुस्तक दो। 2. भूखे को भोजन देना चाहिए। 3. नौकर स्वामी के लिए फल लाता है। 4. किसान अन्न के लिए खेत सींचता है। 5. मन्त्री सैनिक को पुरस्कार देता है। 6. तुम मुझे अपनी पुस्तक दो। 7. पिता के लिए फल लाया। 8. वे प्यासे को पानी देंगे। 9. लोग ज्ञान के लिए अध्ययन करते हैं। 10. वे लोग धोबी को कपड़ा नहीं देंगे।

सहायक शब्द – भूखे को = बुभुक्षिताया। नौकर = सेवक। प्यासे को = पिपासिताय, तृषिताय। धोबी को = रजकस्य।

7. चतुर्थी विभक्ति (उपपद के रूप में)

नियम 1. 'रुच्' धातु के योग में जिसे कोई चीज अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **बालकाय मिष्ठान्नं रोचते** – लड़के को मिठाई अच्छी लगती है।

नियम 2. क्रुध् (गुस्सा करना) द्रुह् (शत्रुता करना) ईर्ष्य् (डाह करना) असूय् (निन्दा करना) आदि धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध आदि किया जाता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति** – अध्यापक छात्र पर क्रोध करता है।

नियम 3. नमः, स्वस्ति (कल्याण) स्वाहा, स्वधा, अलम (समर्थ, पर्याप्त) आदि के योग में जिसे नमस्कार आदि किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **रामाय नमः** –राम को नमस्कार है।

विशेष – जब 'नमः' के साथ कृ धातु का प्रयोग होता है, तब द्वितीया विभक्ति नहीं होती है। जैसे– **देवं नमस्करोमि –** देवता को नमस्कार करता हूँ।

1. बालकाय पठनं रोचते। – लड़के को पढ़ना अच्छा लगता है।
2. रामः श्यामाय क्रुध्यति। – राम श्याम पर क्रोध करता है।
3. कंसः कृष्णाय अद्रुह्यत्। – कंस कृष्ण से द्रोह करता था।
4. छात्राः अध्यापकाय असूयन्ति। – छात्र अध्यापक की निन्दा करता है।
5. श्री गणेशाय नमः। – श्री गणेश जी को नमस्कार है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। 2. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। 3. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। 4. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। 5. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। 6. भगवान् शिव को नमस्कार है। 7. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। 8. रावण राम से सदा द्रोह करता था। 9. तुम्हारा कल्याण हो। 10. छात्र अध्यापक को नमस्कार करते हैं।

सहायक शब्द – सज्जनों से = सज्जनेभ्यः। द्रोह करते हो = द्रुह्यसि। पढ़ना = पठनम्,अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्। नमस्कार करते हैं = नमस्कुर्वन्ति।

8. अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम – जिसमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे – **हरिः अश्वात् अपतत्**– हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है, अतः अश्व में पंचमी विभक्ति हुई।

➠ आदर्श वाक्य

1. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत्। – मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
2. छात्राः गृहात् आगच्छन्ति। – छात्र घर से आते हैं।
3. अशोकः वृक्षात् अवतरति। – अशोक पेड़ से उतरता है।
4. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। – पेड़ से पत्तियाँ गिरती हैं।
5. कूपात् जलम् आनय। – कुएँ से पानी लाओ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए– 1. मैं घर से स्कूल जाऊँगा। 2. लड़का पेड़ से गिर पड़ा। 3. वे पुस्तकालय से पुस्तकें लाते हैं। 4. हम लोग बाजार से फल लायेंगे। 5. लड़कियाँ विद्यालय से घर जा रही हैं। 6. तुम लोग कक्षा से बाहर मत जाओ। 8. मैं तालाब से पानी लाऊँगी। 9. घुड़सवार घोड़े से गिर पड़ा। 10. तुम लोग जंगल से बाहर जाओ।

सहायक शब्द– लाते हैं = आनयन्ति। बाजार से = आपणात्। बाहर = बहिः। घुड़सवार = अश्वारोही।

9. अपादान कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **सः चौरात् विभेति –** वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–** पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम 2. जिससे कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे – गुरुः शिष्यं कुमार्गात् निवारयति– गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम 3. जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे अहं गुरोः व्याकरणं पठामि। मैं गुरु जी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम 4. अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा), ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी होती है। जैसे– **ग्रामात् पूर्वं नदी बहति–** गाँव से पूर्व में नदी बहती है।

➡ आदर्श वाक्य

1. जनाः सिंहात् बिभ्यन्ति।	– लोग सिंह से डरते हैं।
2. त्वं चौरात् बालं रक्ष।	– तुम चोर से बालक को बचाओ।
3. कृषकाः क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति।	– किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
4. बालकाः अध्यापकात् गणितं पठन्ति।	– लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
5. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः।	– ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
6. गंगा हिमालयात् प्रभवति।	– गंगा हिमालय से निकलती है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। 2. चूहे बिल्ली से डरते हैं। 3. तालाब में कमल पैदा होते हैं। 4. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। 5. माली बाग से जानवरों को निकालता है। 6. चैत के पहले फागुन आता है। 7. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? 8. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है। 9. धन के बिना सुख नहीं होता है। 10. पेड़ों से पत्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

सहायक शब्द – आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषकाः। बिल्ली = मार्जार, डालः। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्यः।

10. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

नियम 1. जब किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट होता है, तब जिसका सम्बन्ध होता है उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। इसकी पहचान का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने है। जैसे– अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रं आसीत्– अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था। यहाँ अर्जुन तथा पुत्र में सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः 'अर्जुनस्य' में षष्ठी विभक्ति हुई है।

नियम 2. समान (बराबर) अर्थ रखने वाले तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में जिससे तुलना की जाती है, उसमें षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– रामस्य रामेण वा समः कोऽपि नास्ति– राम के समान कोई भी नहीं है।

➡ आदर्श वाक्य

1. कूपस्य जलं शीतलं भवति।	– कुएं का पानी ठंडा होता है।
2. रामस्य माता कौशल्या आसीत्।	– राम की माता कौशल्या थीं।
3. तव गृहं कुत्र अस्ति।	– तुम्हारा घर कहाँ है?
4. स्वस्थ वचनं पालय।	– अपने वचन का पालन करो।
5. सः अध्ययनस्य हेतोः काश्यां वसति।	– वह अध्ययन के हेतु काशी में रहता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए – 1. कंस कृष्ण का शत्रु था। 2. कालिदास संस्कृत के कवि हैं। 3. दुष्टों की संगति नहीं करनी

चाहिए। 4. मैंने अपना सब धन दान कर दिया। 5. तुम्हारा भाई यहाँ कब आवेगा। 6. तुलसीदास रामायण के रचयिता थे। 7. भक्त ईश्वर का स्मरण करता है। 8. कर्ण के समान कोई न था। 9. नदी का पानी धीरे-धीरे बहता है। 10. उसका नाम सदा अमर है।

सहायक शब्द – धीरे-धीरे = शनैः-शनैः। अपना = स्वस्य।

11. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

नियम 1. जिस स्थान या वस्तु में कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'में' या पर है। जैसे– अहं विद्यालये पठामि– मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। यहाँ पढ़ने का कार्य विद्यालय में हो रहा है, अतः विद्यालय में सप्तमी विभक्ति हुई है।

नियम 2. जिसके लिए स्नेह, आसक्ति एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 3. समुदायवाचक शब्द में तथा जिस समय या स्थान में कोई काम किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे– **कविषु कालिदासः श्रेष्ठः आसीत्** – कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे। प्रथमे दिवसे सः आगमिष्यति– पहले दिन वह यहाँ आयेगा।

➠ आदर्श वाक्य

1. सरोवरे कमलानि विकसन्ति।	– तालाब में कमल खिलते हैं।
2. वयं नद्यां स्नानं कुर्मः।	– हम लोग नदी स्नान करते हैं।
3. मम पिता मयि स्निह्यति।	– मेरे पिता जी मुझ पर स्नेह रखते हैं।
4. गुरौ भक्तिः कुर्यात्।	– गुरु जी पर भक्ति रखनी चाहिए।
5. अस्मिन् समये वयं पठिष्यामः।	– इस समय हम लोग पढ़ेंगे।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. पेड़ों पर चिड़ियाँ बोलती हैं। 2. काशी में विश्वनाथ का मन्दिर है। 3. अध्यापक छात्रों पर स्नेह रखते हैं। 4. फूलों पर भौंरे गूँज रहे हैं। 5. कृष्ण का जन्म जेल में हुआ था। 6. मैं अपने भाइयों में बड़ा हूँ। 7. काव्यों में नाटक सुन्दर होता है। 8. आज मेरे घर में उत्सव होगा। 9. धर्म में प्रेम रखना चाहिए। 10. वह दूसरे दिन आवेगा।

सहायक शब्द – बोलती हैं = कूजन्ति। गूँज रहे हैं = गुञ्जन्ति। बड़ा = ज्येष्ठ। सुन्दर = रम्यम्। प्रेम = रतिः। रखना चाहिए = कुर्यात्।

12. सम्बोधन

नियम 1. जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न हे, अरे, ऐ, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। जैसे– हे राम! भो बालक! अरे लड़के! आदि।

नियम 2. संस्कृत में सम्बोधन के एक वचन में रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष – सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

➠ आदर्श वाक्य

1. भो पुत्र! त्वं कुत्र गच्छसि।	– अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?
2. बालकाः! प्रतिदिनं प्रातः उद्यानं भ्रमत।	– लड़कों! प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. छात्रो! परिश्रम से पढ़ो। 2. गुरुदेव! चित्र में क्या है? 3. हे राम! मेरी रक्षा करो। 4. महर्षि! आप सब कुछ जानते हैं। 5. विद्यार्थियों! अपने आसन पर बैठ जाओ।

विभिन्न प्रयोगों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. सर्वनामों का प्रयोग

1. **युष्माकं** गृहं कुत्र अस्ति? – तुम्हारा घर कहाँ है?
2. **तस्य** बालकस्य किं नाम अस्ति? – उस लड़के का नाम क्या है?
3. **यस्य** चित्ते दया भवति, सः साधुः भवति। – जिसके चित्त में दया होती है, वह साधु होता है।
4. **तस्मै** बालकाय दुग्धं वितर। – उस बालक के लिए दूध बाँटो।
5. **एतानि** पुस्तकानि मह्यं यच्छ। – इन पुस्तकों को मुझे दो।
6. **तस्यां** नगर्यां कः अवसत्? – उस नगरी में कौन रहता था?
7. **कस्मिश्चिद्** नगरे एकः ब्राह्मणः वसति स्म। – किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था।
8. **कस्यचिद्** नृपस्य हस्ती मरणासन्नः आसीत्। – किसी राजा का हाथी मरणासन्न था।
9. **सः तस्मै** विप्राय धेनुं ददाति। – वह उस ब्राह्मण के लिए गाय देता है।
10. **कस्यचित्** बालिकायै फलं यच्छ। – किसी लड़की को फल दो।

नियम 1. युष्मद् (तू), अस्मद् (मैं), तद् (वह), एतद् (यह), इदम् (यह), अहम् (मैं), किम्, (कौन, किस) यद् (जो), सर्व (सब) आदि सर्वनाम हैं। इनके रूप पहले लिखे जा चुके हैं।

नियम 2. सर्वनामों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके कारक और वचन पहले कहे हुए नियमों के अनुसार ही होते हैं। जैसे–

वाक्य, 1 'तुम्हारा' में युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन होने से इसकी संस्कृत 'युष्माकम्' है। इसी प्रकार वाक्य 3 में 'यस्य' षष्ठी एकवचन है।

नियम 3. सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति भी होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन अपने विशेष्य की तरह होते हैं। जैसे– वाक्य 2 में 'उस' सर्वनाम 'लड़के का' की विशेषता प्रकट कर रहा है। इसकी संस्कृत बालकस्य में पुंल्लिङ्ग की षष्ठी का एकवचन है, अतः 'उसकी' संस्कृत 'तद्' का भी पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का रूप 'तस्य' है।

इसी प्रकार वाक्य 5 में 'पुस्तकानि' के नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन होने के कारण 'इन' की संस्कृत 'एतत्' का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप 'एतानि' प्रयोग में लाया गया है।

इसी प्रकार वाक्य 6 में 'नगर्याम्' के स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन होने के कारण 'तस्याम्' भी 'तद्' का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप प्रयोग में आया है।

नियम 4. किस की संस्कृत 'किम्' शब्द के रूपों में 'चित्' जोड़ने से बनती है, किन्तु ऐसे स्थान पर 'किम्' शब्द के विशेष्य से लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के अनुसार चलाकर 'चित्' जोड़ा जाता है और आवश्यकतानुसार सन्धि भी करनी पड़ती है। जैसे– वाक्य 7 में किसी 'नगरे' का विशेषण है। नगरे में नपुंसकलिङ्ग सप्तमी एकवचन है, अतः किम् शब्द का नपुंसकलिङ्ग एकवचन के रूप 'कस्मिन्' में 'चित्' जोड़कर सन्धि करने से 'कस्मिश्चिद्' रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 8 में 'नृपस्य' के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन होने के कारण किम् के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का 'कस्य' में 'चित्' जोड़कर ' कस्यचित्' का रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 10 में 'बालिकायै' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन होने के कारण 'कि' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप, 'कस्यै' में 'चित्' जोड़कर 'कस्यैचित्' रूप प्रयुक्त हुआ।

2. विशेषणों का प्रयोग

1. विशेषणों के विभक्ति, वचन और लिङ्ग अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

2. 'मुझ जैसा' और 'तुझ जैसा' आदि की संस्कृत बनाने के लिए इनके वाचक सर्वनाम शब्दों में 'दृश्' जोड़ दिया जाता है। इनके लिङ्ग, विभक्ति, वचन भी अपने विशेष्य के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं।

➠ आदर्श वाक्य

1. मैं सफेद घोड़ा देखता हूँ। – अहं श्वेतम् अश्वं पश्यामि।
2. यह जल पवित्र है। – एतत् जलं पवित्रम् अस्ति।
3. पथिक वृक्ष की शीतल छाया में बैठता है। – पथिकः वृक्षस्य शीतलायां छायाः तिष्ठति।
4. मैं गर्म जल से मुँह धोता हूँ। – अहम् उष्णेन जलेन मुखं प्रक्षालयामि।
5. वे निर्बल पुरुषों की रक्षा करते हैं। – ते निर्बलान् पुरुषान् रक्षन्ति।
6. भीम सबसे बलवान् थे। – भीमः बलवत्तमः आसीत्।
7. रमा एक श्रेष्ठ स्त्री है। – रमा एका श्रेष्ठा नारी आसीत्।
8. विपिन उत्तम छात्र है। – विपिनः उत्तमः छात्रः अस्ति।
9. वीर पुरुषों की प्रशंसा सब जगह होती है। – वीराणां पुरुषाणां प्रशंसा सर्वत्र भवति।
10. राम भरत से बड़े थे। – रामः भरतात् ज्येष्ठतरः आसीत्।

3. उपसर्ग युक्त धातुओं का प्रयोग

नियम 1. उपसर्ग धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं जैसे– हृ (हर) धातु का अर्थ हरण करना, चुराना है, किन्तु इसके पहले **'वि'** उपसर्ग जुड़ जाने से विहरति (प्रथम पुरुष एकवचन) रूप बनता है। उसका विहार करता है, घूमता है, हो जाता है।

नियम 2. लङ्लकार (भूतकाल) में धातु से पहले 'अ' जुड़ता है किन्तु यह 'आ' मूल धातु से पहले जुड़ता है, उपसर्ग से पहले नहीं। अतः भूतकाल के रूप से पहले उपसर्ग जोड़ कर सन्धि करके उपसर्ग युक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे– गम् धातु का भूतकाल (लङ्लकार) से रूप अगच्छत् होता है। उसके पहले उपसर्ग **'निर्'** जोड़ने से उसका रूप निर्गच्छत् (निकला) बनेगा इसी तरह अनु + अभवत् = अन्वभवत् (अनुभव किया) आदि होता है।

विशेष – इसका विस्तृत विवरण उपसर्ग अंश में पढ़िये। यहाँ अनुवाद में केवल उनका प्रयोग दिया गया है।

➠ आदर्श वाक्य

1. सैनिकाः बाणैः शत्रून् प्रहरन्ति। – सैनिक बाण से शत्रुओं को मारते रहे।
2. लक्ष्मणः रामम् अन्वगच्छत्। – लक्ष्मण राम के पीछे गया।
3. बालकः गृहात् वहिः निर्गच्छत्। – लड़का घर से बाहर निकला।
4. अहं प्रसन्नताम् अनुभविष्यामि। – मैं प्रसन्नता का अनुभव करूँगा।

4. कृदन्त प्रयोग

क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)

नियम 1. मुख्य क्रिया को करने से पहले जो काम किया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। हिन्दी में ऐसी क्रिया

के बाद में 'कर' या 'करके' जुड़े रहते हैं।

संस्कृत में इसे धातुओं के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ कर बनाते हैं। जैसे – पठ् + क्त्वा = पठित्वा–पढ़कर आदि।

2. धातुओं से पूर्व निषेधार्थक 'अ' अथवा 'न' को छोड़कर यदि कोई उपसर्ग (प्र, परा, अप, सम आदि) होता है, तो क्त्वा के स्थान में ल्यप् हो जाता है। ल्यप् में 'य' शेष रहता हैं। जैसे – उप + विश् + क्त्वा (ल्यप्)– उपविश्य – बैठकर।

3. क्त्वा प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठित्वा गृहं गमिष्यति। – लड़का पढ़कर घर जाएगा।
2. सः गुरुं प्रणम्य उपविशति। – वह गुरु को प्रणाम कर बैठता है।
3. हस्तौ प्रक्षाल्य भोजनं कुर्यात्। – हाथ धोकर भोजन करना चाहिए।
4. अहं कार्यम् अकृत्वा गृहं न गमिष्यामि। – मैं काम किये बिना घर नहीं जाऊँगा।

तुमुन् प्रत्यय (उत्तरकालिक क्रिया)

नियम 1. 'के लिए' आदि द्वारा निमित्त या प्रयोजन सूचित करने के लिए धातु के आगे तुम् (तुमुन् प्रत्यय) का प्रयोग होता है। जैसे – दा + तुमुन् = दातुम् – देने के लिए। पठ् + तुमुन् = पठितुम् – पढ़ने के लिए, आदि।

नियम 2. तुमुन् (तुम) प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

नियम 3. तुमुन् प्रत्यय वहीं होता है, जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही हो। भिन्न कर्त्ता होने पर तुमुन्, प्रत्यय नहीं होता।

नियम 4. यत् (यत्न करना) शक् (सकना) लभ् (पाना) विद् (जानना) इष् (इच्छा करना) आदि धातुओं के योग में 'तुमुन्' प्रत्यय होता है। जैसे– सः गृहं गन्तुम् इच्छति–सः स्नातुं (स्नानाय) गच्छति– वह नहाने जाता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः लेखितुं यतते। – लड़का लिखने का प्रयत्न करता है।
2. अहं गृहं गन्तुम् इच्छामि। – मैं घर जाना चाहता हूँ।
3. अयं विद्यालयं गन्तुं समयः अस्ति। – यह विद्यालय जाने का समय है।
4. सः पठितुं, पठनाय वा विद्यालयं गच्छति। – वह पढ़ने के लिए स्कूल जाता है।

शतृ, शानच् प्रत्यय (वर्तमान कालिक कृदन्त)

नियम 1. हिन्दी के 'जाता हुआ, खाता हुआ, आदि अर्थों में परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अन्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं।

नियम 2. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। अतः उनके लिङ्ग, वचन, विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

विषय – शतृ और शानच् प्रत्ययों को विशेषणात्मक कृदन्त भी कहते हैं। ये भविष्यकाल की क्रिया के साथ भी लगते हैं।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठन् गच्छति। – लड़का पढ़ता हुआ जा रहा है।
2. हसन्तीम् बालिकां पश्य। – हँसती हुई लड़की को देखो।
3. वृक्षात् पतत् फलं पश्य। – पेड़ से गिरते हुए फल को देखो।
4. शयानः पुरुषः तिष्ठति। – सोता आदमी बैठा है।
5. अहं कम्पमानां बालिकाम् अपश्यम्। – मैंने काँपती हुई लड़की को देखा।

क्त और क्तवतु प्रत्यय (भूतकालिक कृदन्त)

नियम 1. भूतकाल में (काम के पूर्णतया समाप्त हो जाने पर) धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इनमें 'क्त' में 'त' और 'क्तवतु' में 'तवत्' शेष रहता है।

नियम 2. 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में होता है।

नियम 3. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति आदि इनके विशेष्यों के अनुसार होते हैं।

नियम 4. क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह तीनों लिङ्गों में चलते हैं। जैसे– गतः त्युं। गता (स्त्री) गतम् (नपुं) आदि।

नियम 5. क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग में 'भगवत्', स्त्रीलिङ्ग में ईकार जोड़कर 'नदी' और नपुंसकलिङ्ग 'जगत्' शब्द के समान होते हैं। जैसे– गतवान्, गतवन्तौ, गतवन्तः (पु0) गतवती, गतवत्यौ, गतवंत्यः (स्त्री) तथा गतवत् आदि नपुंसकलिङ्ग।

➡ आदर्श वाक्य

1. रामेण रावणो हतः। – राम ने रावण को मारा।
2. बालकेन पुस्तकं पठितम्। – लड़के ने पुस्तक पढ़ा।
3. मया अद्य काशी दृष्टा। – मैंने आज काशी देखी।
4. सः गतः अथवा तेन गतम्। – वह गया।
5. रामः गृहं गतवान्। – राम घर गया।

●●

|| महत्त्वपूर्ण हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ||

1.	गंगा नदी सभी नदियों में प्रसिद्ध और पवित्र मानी जाती है।	गंगा नद्यः सर्वासु नदीषु प्रसिद्ध पवित्रः च मन्यते।
2.	परिश्रम के बिना विद्या और विद्या के बिना सुख नहीं मिलता।	परिश्रमं विना विद्या विद्यां विना सुखः न प्राप्यते।
3.	परिश्रमी छात्र ही गुरुजनों के स्नेहभाजन होते हैं।	परिश्रमी छात्रः एव गुरुजनस्य स्नेहभाजनं भवति।
4.	नदी के दोनों ओर पेड़ हैं।	नदीम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
5.	भगवान् के बिना सुख नहीं है।	भगवानं बिना सुखं नास्ति।
6.	गुरु को नमस्कार।	गुरवे नमः।
7.	मेरे गाँव से पहले एक नदी पड़ती है।	मम ग्रामं पूर्वः एकः नदी अस्ति।
8.	विद्यालय के चारों ओर सड़क है।	विद्यालयं परितः पथः अस्ति।
9.	कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं।	कृष्णम् उभयतः ग्वालाः सन्ति।
10.	राम और श्याम के बीच में मोहन है।	अन्तरा रामं श्यामंच मोहनः।
11.	राम सीता के साथ वन गये।	रामः सीतया सह वनम् अगच्छत्।
12.	घी के बिना भोजन अच्छा नहीं लगता।	घृतं बिना भोजनं न रोचते।
13.	प्रजाओं का कल्याण हो।	स्वस्ति प्रजाः।
14.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ कवि हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः कविः।
15.	सतीश पैर से लंगड़ा है।	सतीशः पादेन खञ्जः अस्ति।
16.	साहित्य और संगीत के बिना मनुष्य पशु है।	साहित्यं संगीतं च बिना मनुष्यः पशुः अस्ति।
17.	मेरे साथ मेरा मित्र विद्यालय जाता है।	मया सह मम मित्रः विद्यालयं गच्छति।
18.	उद्यान के दोनों ओर मार्ग हैं।	उद्यानम् उभयतः पथौ स्तः।
19.	सभी देवताओं को नमस्कार।	सर्वेभ्यः देवेभ्यः नमः।
20.	बालक साँप से डरता है।	बालकः सर्पात् विभेति।
21.	राजा शत्रुओं पर क्रोध करता है।	नृपः शत्रवे क्रुध्यति।
22.	छात्रों में मोहन मेधावी है।	छात्रेषु मोहनः कुशाग्रबुद्धिः अस्ति।
23.	द्वीप के चारों ओर समुद्र है।	द्वीपं परितः सागरः अस्ति।
24.	राकेश स्वभाव से सरल है।	राकेशः स्वभावेन सरलः अस्ति।
25.	वह सिर से गंजा है।	सः शिरसा खल्वाटः अस्ति।
26.	मैं गुरु के साथ विद्यालय जाता हूँ।	अहं गुरुणा सह विद्यालयं गच्छामि।
27.	अध्ययन के बिना ज्ञान नहीं प्राप्त होता है।	अध्ययनेन विना ज्ञानः न प्राप्यते।
28.	मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।	मानवेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः।
29.	वह भिक्षुकों को भोजन देता है।	सः भिक्षुकाय भोजनं ददाति।
30.	देवदत्त आसन पर बैठता है।	देवदत्तः आसने तिष्ठति।

31.	नगर के दोनों ओर नदी है।	नगरम् उभयतः नदी अस्ति।
32.	छात्र को पढ़ना अच्छा लगता है।	छात्रै अध्ययनं रोचते।
33.	वह अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	सः अध्ययनाय नगरं वसति।
34.	गणेश को नमस्कार।	गणेशाय नमः।
35.	राम के साथ सीता भी वन गयीं।	रामेण सह सीता अपि वनं गतवती।
36.	बालक पिता से मार्ग पूछता है।	बालकः पितरं मार्गं पृच्छति।
37.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	अस्माकं विद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
38.	हिमालय से गङ्गा निकलती है।	हिमालयात् गंगा निर्गच्छति।
39.	छात्रों में राम कुशल है।	रामः छात्रेषु कुशलः।
40.	भक्त मुक्ति के लिए हरि को भजता है।	भक्तः मुक्तये हरिं भजति।
41.	रमा वृक्ष से फल चुनती है।	रमा वृक्षमविचिनोति फलानि।
42.	महल के चारों ओर उद्यान है।	महलं परितः उद्यानमस्ति।
43.	रमेश आँख से काना है।	रमेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
44.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
45.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।
46.	मैं ब्राह्मण को गाय देता हूँ।	अहं विप्राय गां ददामि।
47.	विक्रमादित्य की सभा में रहे नवरत्नों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	विक्रमादित्यस्य सभायाम् उपस्थित-नवरत्नेषु कालिदासः श्रेष्ठः।
48.	दुर्जनों को दूर से नमस्कार।	दुर्जनेभ्यः दूरात् नमः।
49.	मूर्ख को धिक्कार।	जाड्यं धिक्।
50.	गाँव के चारों ओर खेत हैं।	ग्रामं परितः क्षेत्राः सन्ति।
51.	यह बालिका स्वभाव से सरल है।	एषा बालिका स्वभावेन सरलः अस्ति।
52.	छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहा है।	छात्र अध्ययनाय विद्यालयं गच्छति।
53.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
54.	मोहन राजा से क्षमा माँगता है।	मोहनः राजानं क्षमा याचते।
55.	सुरेश आँख से काना है।	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
56.	सीता राम के साथ वन गयी।	सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
57.	राम को दूध अच्छा लगता है।	रामाय दुग्धं रोचते।
58.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
59.	गाँव के दोनों ओर नदी है।	ग्रामम् उभयतः नदी अस्ति।
60.	गंगा और यमुना के बीच प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुनाच प्रयागः अस्ति।
61.	सुरेश पैर से लंगड़ा है।	सुरेशः पादेन खञ्जः अस्ति।
62.	राम अध्ययन के लिए नगर में रहता है।	रामः अध्ययनस्य हेतोः नगरं वसति।
63.	राणाप्रताप का घोड़ा इतिहास में प्रसिद्ध है।	राणाप्रतापस्य अश्वः इतिहासे प्रसिद्धः।
64.	विद्यालय के चारों तरफ वृक्ष हैं।	विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।
65.	हमारे देश में अनेक नदियाँ बहती हैं।	अस्माकं देशे अनेकानि नद्यः प्रवहन्ति।

66.	गाँव के चारो ओर जंगल हैं।	ग्रामं परितः वनानि सन्ति।
67.	जंगल के मध्य एक सरोवर है।	वनस्य मध्ये एकः सरोवरः अस्ति।
68.	उसका जल अत्यन्त निर्मल है।	तस्य जलः अत्यन्तः निर्मलः अस्ति।
69.	प्रायः स्नान के लिए लोग वहाँ जाते हैं।	प्रायः स्नानार्थम् जनाः तत्र गच्छन्ति।
70.	सरोवर के तट पर एक आश्रम भी है।	सरोवरस्य तटे एकः आश्रमः अपि अस्ति।
71.	राजसेवक शासन का अंग है।	राजसेवकः शासनस्य अंगः अस्ति।
72.	छात्रों में श्याम मेधावी है।	छात्रेषु श्यामः मेधावी अस्ति।
73.	यात्री छात्र से रास्ता पूछता है।	पथिकः छात्रं पथं पृच्छति।
74.	कृष्ण के चारों ओर ग्वाल-बाल हैं।	कृष्णं परितः ग्वाल-बालाः सन्ति।
75.	नगर के चारों ओर जङ्गल है।	नगरं परितः वनः अस्ति।
76.	छात्र अध्यापक के साथ आते हैं।	छात्राः शिक्षकेन सह आगच्छन्ति।
77.	कारुणिकजन याचकों को धन देते हैं।	कारुणिकजनाः याचकाय धनं ददन्ति।
78.	छात्र गुरु से प्रश्नोत्तर पूछता है।	छात्र गुरुं प्रश्नोत्तरं पृच्छति।
79.	वह भिक्षकों को भोजन देता है।	सः भिक्षुकाय भोजनं ददाति।
80.	वह शिर से खल्वाट है।	सः शिरसा खल्वाटः अस्ति।
81.	गाँव के दोनों ओर नदी है।	ग्रामं परितः नद्यः अस्ति।
82.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
83.	गङ्गा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुनाच प्रयागः अस्ति।
84.	सुरेश पैर से लंगड़ा है।	सुरेशः पादेन खञ्जः।
85.	देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	देवदत्तः अध्ययनाय नगरे निवसति।
86.	छात्रों में रमेश उत्तम है।	छात्रेषु उत्तमः रमेशः।
87.	नदी के दोनों ओर आम के पेड़ हैं।	नदीम् उभयतः आम्रवृक्षाः सन्ति।
88.	अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।	अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।
89.	रमेश मामा के साथ बाजार गया।	रमेशः मातुलेन सह हाटम् अगच्छत्।
90.	देवदत्त स्वभाव से मधुर है।	देवदत्तः स्वभावेन मधुरः अस्ति।
91.	पर्वत के दोनों ओर नदियाँ हैं।	पर्वतम् उभयतः नद्याः सन्ति।
92.	गायों में काली गाय बहुत दूध देनेवाली होती है।	गवेषु कृष्णः धेनुः बहुक्षीराः भवति।
93.	पिता पुत्र के साथ विद्यालय जाता है।	पिता पुत्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
94.	ग्राम के चारों ओर वन है।	ग्रामं परितः वनम् अस्ति।
95.	भगवान वैकुण्ठ में रहते हैं।	भगवान वैकुण्ठं अधिशेते।
96.	ग्राम के दोनों ओर नदी है।	ग्रामं उभयतः नदी अस्ति।
97.	गुरु शिष्य के साथ पुस्तकालय जाता है।	गुरुः शिष्येण सह पुस्तकालयं गच्छति।
98.	नदियों में गङ्गा सबसे अधिक पवित्र है।	नदीषु गङ्गा सर्वासु पवित्रः अस्ति।
99.	गृहस्थ भिखारियों को धन देता है।	गृहस्थः भिक्षुकेभ्यः धनं ददाति।
100.	मोहन राम के साथ विद्यालय जाता है।	मोहनः रामेण सह विद्यालयं गच्छति।
101.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
102.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।

103.	मैं लिखता हूँ।	अहं लिखामि।
104.	सुरेश आँख से काना है।	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
105.	रमेश दौड़ता है।	रमेशः धावति।
106.	हम दोनों कहाँ जाते हैं?	आवां कुत्र गच्छावः?
107.	गाँव के समीप विद्यालय है।	ग्रामं निकषा विद्यालयं अस्ति।
108.	हिमालय से नदी निकलती है।	हिमालयात् नदी प्रभवति।
109.	गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।	गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
110.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर नदी है।	अस्माकं विद्यालयं उभयतः नदी अस्ति।
111.	सीता राम के साथ वन में जाती है।	सीता रामेण सह वनं गच्छति।
112.	हिमालय से गंगा निकलती है।	हिमालयात् गङ्गा प्रभवति।
113.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
114.	सुरेश राम से पुस्तक माँगता है।	सुरेशः रामं पुस्तकं याचते।
115.	देवदत्त स्वभाव से दयालु है।	देवदत्तः स्वभावेन दयालुः अस्ति।
116.	तीर्थों में प्रयाग श्रेष्ठ है।	तीर्थेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।
117.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
118.	गाँव के दोनों ओर जलाशय है।	ग्रामं उभयतः जलाशयः अस्ति।
119.	गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुना च प्रयागः अस्ति।
120.	महेश एक आँख से काना है।	महेशः एकं अक्ष्णा काणः अस्ति।
121.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
122.	नदी एक कोस टेढ़ी-मेढ़ी है।	क्रोशं कुटिला नदी।
123.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
124.	हमारे महाविद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	अस्माकं महाविद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
125.	छात्रों में राम कुशल है।	छात्रेषु रामः कुशलः।
126.	मुक्ति के लिए भक्त हरि को भजता है।	मुक्तये भक्तः हरिं भजति।
127.	तुम जल से मुख धोते हो।	त्वं जलेन मुखं प्रक्षालयसि।
128.	विद्यालय के चारों ओर वन है।	विद्यालयं परितः वनं अस्ति।
129.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
130.	माधव लेखनी से लिखता है।	माधवः लेखन्या लिखति।
131.	गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।	ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
132.	राम ने रावण को बाण से मारा।	रामः रावणं बाणेन अहनत्।
133.	मोहन पैर से लंगड़ा है।	मोहनः पादेन खञ्जः।
134.	देवदत्त को लड्डू अच्छे लगते हैं।	देवदत्ताय मोदकं रोचते।
135.	घर के दोनों ओर बगीचा है।	गृहम् उभयतः उद्यानम् अस्ति।
136.	बगीचे में सुन्दर पुष्प हैं।	उद्याने सुन्दरं पुष्पाणि सन्ति।
137.	गणेशजी को लड्डू अच्छा लगता है।	गणेशाय मोदकं रोचते।
138.	शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है।	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
139.	वह जल से हाथ धोता है।	सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।

140.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
141.	वह चोर से डरता है।	सः चौरात् विभेति।
142.	भक्त हरि को भजता है।	भक्तः हरिं भजति।
143.	वह महीने भर निरन्तर पढ़ता है।	सः मासं यावत् निरन्तरः पठति।
144.	राम श्याम के साथ जाता है।	रामः श्यामेण सह गच्छति।
145.	बालक घोड़े से गिरता है।	बालकः अश्वात् पतति।
146.	मन्दिर के चारों ओर पुष्प पादप हैं।	मन्दिरं अभितः पुष्पाणि पादपानि सन्ति।
147.	विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।	विष्णु बलिं वसुधां याचते।
148.	देवदत्त दोनों नेत्रों से काना है।	देवदत्तः नेत्राभ्यां काणः।
149.	हम दोनों माता-पिता के साथ बाजार गये।	आवाम् माता-पित्रेण सह आपणम् अगच्छताम्।
150.	लङ्का के चारों ओर समुद्र है।	लङ्कां अभितः समुद्रः अस्ति।
151.	गाँव के निकट ही दो नदियाँ हैं।	ग्रामं निकषा एव द्वौ नद्यौ स्तः।
152.	मित्रों के साथ पढ़ने जाओ।	मित्रेण सह पठितुं गच्छ।
153.	विद्यालय के चारों ओर बाग है।	विद्यालयं अभितः उद्यानम् अस्ति।
154.	वह घोड़े से गिर पड़ा।	सः अश्वात् अपतत्।
155.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वाला गां दुग्धं दोग्धि।
156.	देवदत्त चावलों से भात पकाता है।	देवदत्तः तन्दुलान् ओदनं पचति।
157.	मन्दिर के चारों ओर वाटिका है।	मन्दिरं परितः वाटिका अस्ति।
158.	वह मित्रों के साथ विद्यालय जाता है।	सः मित्रैः सह विद्यालयं गच्छति।
159.	दुर्योधन पाण्डवों पर क्रोध करता है।	दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः क्रुध्यति।
160.	भीष्म वीरों में श्रेष्ठ थे।	भीष्मः वीरेषु श्रेष्ठः आसीत्।
161.	वह निर्धनों को धन देता है।	सः निर्धनेभ्यः धनं ददाति।
162.	विद्यालय के चारों ओर विशाल वृक्ष हैं।	विद्यालयं परितः विशालवृक्षाः सन्ति।
163.	सिद्धार्थ कलम से लिखता है।	सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।
164.	गंगा हिमालय से निकलती हैं।	गंगा हिमालयात् निर्गच्छति।
165.	तीर्थस्थलों में लोग भूमि पर सोते हैं।	तीर्थस्थलेषु जनाः भूमे शयनं कुर्वन्ति।
166.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
167.	राजाओं में राम श्रेष्ठ हैं।	नृपेषु रामः श्रेष्ठः।
168.	छात्र अध्यापक से प्रश्न पूछता है।	छात्रः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
169.	भगवान् को नमस्कार।	भगवते नमः।
170.	नदी कोस भर टेढ़ी है।	क्रोशं कुटिला नदी।
171.	राधा चोरों से डरती है।	राधा चौरात् विभेति।
172.	मनुष्यों में परोपकारी ही प्रशंसनीय है।	मानवेषु परोपकारी एव प्रशंसनीयः।
173.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	ज्ञानेन बिना मुक्तिः न भवति।
174.	रमा पूजा के लिए फूल चुनती है।	रमा पूजाय पुष्पं चिनोति।
175.	मेरा मित्र कानों से बहरा है।	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
176.	छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहे हैं।	छात्राः अध्ययनस्य हेतोः विद्यालयं गच्छन्ति।

177.	तालाब के दोनों ओर बहुत पेड़ हैं।	तडागम् उभयतः बहवः वृक्षाः सन्ति।
178.	हम लोग शाम को कुटी जाते हैं।	वयं सायंकाले कुटीं गच्छामः।
179.	सबेरे घूमना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।	प्रातःकालीन भ्रमणः स्वास्थ्याय हितकरः अस्ति।
180.	हमारे शरीर में स्थित आलस्य हमारा परम शत्रु है।	अस्माकं शरीरस्थितः आलस्य अस्माकं परमशत्रुः।
181.	वह कभी-कभी घोड़े से गिर जाता है।	सः यदा-कदा अश्वात् पतति।
182.	तीर्थराज प्रयाग एक प्रसिद्ध नगरी है।	तीर्थराज प्रयागः एकः प्रसिद्ध नगरी अस्ति।
183.	विद्यालय के दोनों ओर गंगा नदी बहती है।	विद्यालयं उभयतः गङ्गा नदी बहति।
184.	तुम लोग अपने हाथ से काम करो।	यूयं स्व हस्तेन कार्यं कुरुत।
185.	राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये।	रामेण सह लक्ष्मणोऽपि वनम् अगमत्।
186.	पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।	वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति।
187.	राम श्याम पर क्रोध करता है।	रामः श्यामाय क्रुध्यति।
188.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
189.	कुएँ का पानी ठण्डा होता है।	कूपस्य जलं शीतलं भवति।
190.	वह अध्ययन के लिए छात्रावास में निवास करता है।	सः अध्ययनस्य हेतोः छात्रावासे निवसति।
191.	विद्यालय के दोनों ओर सुन्दर उद्यान हैं।	विद्यालयं उभयतः सुन्दराणि उद्यानानि सन्ति।
192.	सभी पक्षियों में मोर अधिक सुन्दर है।	सर्वेषु पक्षिषु मयूरः सुन्दरतमः अस्ति।
193.	विद्या विनय से शोभित होती है।	विद्या विनयेन शोभते।
194.	मेरा मित्र कान से बहरा है।	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
195.	छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।	छात्रेषु गुरुं प्रति श्रद्धा भवेत्।
196.	संस्कृत के कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ हैं।	संस्कृत-कविषु कालिदासः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
197.	मैं पिता के साथ बाजार जाता हूँ।	अहं पित्रा सह आपणं गच्छामि।
198.	बालिका चावल से खीर पकाती है।	बालिका तण्डुलान् पायसम् पचति।
199.	नारी के बिना धर्म कार्य अधूरे होते हैं।	स्त्रीम्, स्त्रिया, स्त्रियाः विना धर्म कार्यं पूर्णं न भवति।
200.	ग्राम के चारों ओर वृक्ष हैं।	ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।
201.	राम कान से बहरा है।	रामः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
202.	मैं अपनी माता से फल माँगता हूँ।	अहं स्व मात्रा फलम् याचामि।
203.	हमारे संस्कृत शिक्षक स्वभाव से सरल हैं।	अस्माकं संस्कृत शिक्षकः स्वभावेन सरलः अस्ति।
204.	प्रयाग में भरद्वाज मुनि का आश्रम है।	प्रयागे भरद्वाज मुनिना आश्रमः अस्ति।
205.	सभी छात्र समय से विद्यालय जाते हैं।	सर्वे छात्राः समयेन विद्यालयं गच्छन्ति।